

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

# ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी

प्रकाशन दिनांक : १ अक्टूबर २०१८

वर्ष : २८ अंक : ४

(निरंतर अंक : ३१०)

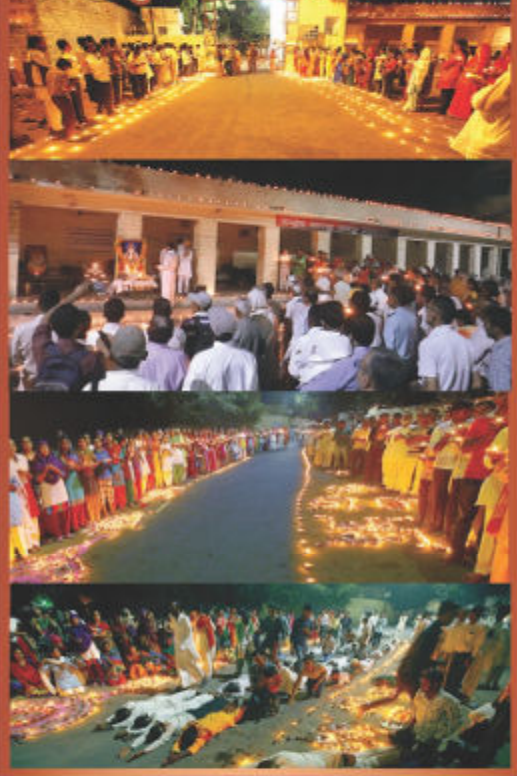
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)



पूज्य संत  
श्री आशारामजी बापू

करोड़ों हृदयों में कर्म, भक्ति व ज्ञान योग के दीयों को जला, उनके जीवन में आध्यात्मिक, आधिदैविक व जागतिक सुख-समृद्धि एवं स्वास्थ्य का संचार करके नित्य दिवाली करनेवाले पूज्य बापूजी के दर्शन-सत्संग हेतु तरस रहे हैं अगणित हृदय

पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई के लिए  
जोधपुर कारागृह के बाहर  
प्रार्थना-पुकार करते आये हैं भक्तजन



‘ऐसी दिवालियाँ फिर जल्दी आयें...’ ऐसी मनोवांछा करते हैं हजारों गरीब, अनाश्रित हृदय



विद्यार्थियों को गुरु-आश्रम में अनुष्ठान हेतु आने का जो अवसर मिलता है, यह बहुत भारी कल्याणकारी अवसर है। - पूज्य बापूजी

उठायें ‘दीपावली विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर’ का लाभ



अहमदाबाद,  
५ से ११ नवम्बर



ऋषि प्रसाद सम्मेलन, लुधियाना

‘शहर-शहर, गाँव-गाँव, घर-घर में पहुँचायेंगे  
ऋषि प्रसाद !’ पृष्ठ १६ भी पढ़ें



# ईश्वर व गुरु के कार्य में

# मतभेदों को आग लगाओ

- पूज्य बापूजी



अगर चित्त में संदेह होगा तो गुरुकृपा के प्रभाव का तुम पूरा फायदा नहीं उठा पाओगे। तुम्हें भले चारों तरफ से असफलता लगती हो लेकिन गुरु ने कहा कि 'जाओ, हो जायेगा' तो यह असफलता सफलता में बदल जायेगी। तुम्हारे हृदय से हुंकार आता है कि 'मैं सफल हो ही जाऊँगा!' तो भले तुम्हारे सामने बड़े-बड़े पहाड़ दिखते हों लेकिन उनमें से रास्ता निकल आयेगा। पहाड़ों को हटना पड़ेगा अगर तुम्हारे में अटूट श्रद्धा है। विघ्नों को हट जाना पड़ेगा अगर तुम्हारा निश्चय पक्का है। डगमगाहट नहीं... 'हम नहीं कर सकते, अनाथ हैं, हम गरीब हैं, अनपढ़ हैं, कम पढ़े हैं, अयोग्य हैं... क्या करें?' अरे, तीसरी से भी कम पढ़े हो क्या? मन-इन्द्रियों में घूमनेवाले लोगों का संकल्प साधक के संकल्प के आगे क्या मायना रखता है! 'यह काम मुश्किल है, यह मुश्किल है...' मुश्किल कुछ नहीं है। जगत-नियंता का सामर्थ्य तुम्हारे साथ है, परमात्मा तुम्हारे साथ है। मुश्किल को मुश्किल में डाल दो कि वह आये ही नहीं तुम्हारे पास! Nothing is impossible, everything is possible. असम्भव कुछ भी नहीं है, सब सम्भव है।

जा के मन में खटक है, वही अटक रहा। जा के मन में खटक नहीं, वा को अटक कहाँ ॥

**विश्वासो फलदायक:**। इसलिए अपना विश्वास गलित नहीं करना चाहिए। अपने विश्वास में अश्रद्धा, अविश्वास का धुन नहीं लगाना चाहिए। 'क्या करें, हम नहीं कर सकते, हमारे से नहीं हो सकता है...' 'नहीं' कैसे? गोरखनाथजी जैसे योगियों के संकल्प से मिट्टी के पुतलों में प्राणों का संचार होकर सेना खड़ी होना यह भी तो अंतःकरण का संकल्प है! तो तुम्हारे पास अंतःकरण और परमात्मा उतने-का-उतना है। नहीं कैसे हो सकता? एक में एक मिलाने पर दुगुनी नहीं ग्यारह गुनी शक्ति होती है। तीन एक मिलते हैं तो १११ हो जाता है, बल बढ़ जाता है। ऐसे ही दो-तीन-चार व्यक्ति संस्था में मजबूत होते हैं सजातीय विचार के, तो संस्था की कितनी शक्ति होती है! देश के बिखरे-बिखरे लोग १२५ करोड़ हैं लेकिन मुट्ठीभर लोग एक पार्टी के झंडे के नीचे एक सिद्धांत पर आ जाते हैं तो १२५ करोड़ लोगों के अगुआ, मुखिया हो जाते हैं, हुकूमत चलाते हैं। एकदम सीधी बात है। साधक-साधक सजातीय विचार के हों, 'वह ऐसा, वह ऐसा...' नहीं। भगवान के रास्ते का, ईश्वर की तरफ ले जानेवाले रास्ते का स्वयं फायदा ले के लोगों तक भी वह पहुँचाना है तो एकत्र हो गये। वे बिल्कुल नासमझ हैं जो आपसी मतभेद के कारण व्यर्थ में ही एक-दूसरे की टाँग खींचकर सेवाकार्य में बाधा डालने का पाप करते हैं। कितने भी आपस में मतभेद हों लेकिन ईश्वरीय कार्य में, गुरु के कार्य में मतभेदों को आग लगाओ; आपका बल बढ़ जायेगा, शक्ति बढ़ जायेगी, समाज-सेवा की क्षमताएँ बढ़ जायेंगी। ॐ... ॐ... ॐ...



# ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २८ अंक : ४ मूल्य : ₹ ६  
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३१०  
प्रकाशन दिनांक : १ अक्टूबर २०१८  
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)  
आश्विन-कार्तिक वि.सं. २०७५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम  
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान  
मुद्रक : राघवेंद्र सुभाषचन्द्र गादा  
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम,  
मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,  
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)  
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफैक्चरर्स, कुंजा मतरालियों,  
पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५  
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी  
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा  
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव  
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व  
न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष,  
मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफैक्चरर्स' (Hari Om Manufactures) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

## सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम,  
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,  
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)  
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७८८  
केवल 'ऋषि प्रसाद' पृष्ठछाह हेतु : (०७९) ३९८७७४२  
Email : ashramindia@ashram.org  
Website : www.ashram.org,  
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

## विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्व देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US \$ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US \$ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US \$ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

## इस अंक में...

- ❖ गुरु संदेश \* बस, तीव्र विवेक होना चाहिए ४
- ❖ भक्तगाथा \* एक नाव में सवार होनेवाले तो तरते हैं लेकिन... ६
- ❖ पर्व मांगल्य \* नूतन वर्ष मंगलमय कैसे हो ? ७
- \* ऐसी दिवाली सैकड़ों गुना फलदायी है १२
- ❖ महापुरुषों की सरल युक्ति, खोले जटिल-से-जटिल गुत्थी ८
- ❖ गीता-अमृत \* कर्म करने की कला ९
- ❖ काव्य गुंजन \* उमंगों के दीप जगाते चलो... - साक्षी १०
- \* सच्चे साधक सच्चे सेवक... - जीवन ३१
- ❖ आत्मप्रसाद \* भगवान का प्यारा कैसे बनें ? ११
- ❖ प्रेरक प्रसंग \* पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग १४
- ❖ ऋषि ज्ञान प्रसाद \* सेवा से मिलता है आत्मसंतोष १६
- ❖ योग-वेदांत-सेवा \* कर्म से बंधन और मुक्ति दोनों सम्भव हैं १७
- ❖ विद्यार्थी संस्कार \* ...महान आयुर्वेदाचार्य १८
- \* खुले सफलता के द्वार - मनीष कुमार यादव
- ❖ तेजस्वी युवा \* शक्ति का अपव्यय व संरक्षण कैसे ? २०
- ❖ महिला उत्थान \* एक आदर्श नारी, जिनका सम्पूर्ण जीवन है... २१
- ❖ शास्त्र प्रसंग \* ...शुक-देह में स्थित ज्ञानवान की आत्मकथा २२
- \* विष सर्प में है, बाँबी में नहीं ! २८
- ❖ वैराग्य शतक \* हे मानव ! वृद्धावस्था आने से पहले तू चल पड़ २४
- ❖ तत्त्व विचार \* सब अनर्थों का बीज और उसका नाश २५
- ❖ प्रश्नोत्तर २६
- ❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी \* संत अच्युतानंददास २७
- \* स्वामी दयानंदजी सरस्वती \* संत नामदेवजी
- \* रामसनेही संत श्री दरियाजी
- ❖ जीवन जीने की कला \* मंत्रजप साधना २८
- ❖ गौ महिमा \* सुख-शांति, संतति व स्वास्थ्य प्रदायक गौ-परिक्रमा २९
- ❖ शरीर स्वास्थ्य \* वर्षभर के लिए स्वास्थ्य-संवर्धन का काल ३०
- \* वमन कफशमनम् \* दैवी चिकित्सा
- \* कमर-दर्द मिटाने व शक्ति बढ़ाने हेतु
- ❖ सेवा संजीवनी ३३
- \* छूटा व्यसन-मांस का फंद, लगा सेवा-भक्ति का रंग - अंजली इसरानी
- \* 'ऋषि प्रसाद' से बनती ऊँची समझ - विजय बहादुर सिंह
- ❖ भक्तों के अनुभव ३४
- \* इष्ट मजबूत हो तो अनिष्ट नहीं होता - विजय कुशवाहा
- ❖ सुखमय जीवन की अनमोल कुंजियाँ ३५

## विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग



Download  
Rishi Prasad  
Official, Rishi  
Darshan &  
Mangalmay  
Official Apps

रोज सुबह ७-०० बजे

रोज रात्रि १०-०० बजे

www.ashram.org/live

- \* 'साधना प्लस न्यूज' चैनल टाटा स्काई (चैनल नं. ५४०), डिश टीवी (चैनल नं. ६७९), रिलायंस डिजिटल टीवी (चैनल नं. ४३१), बिहार में मोर्या सिटी (चैनल नं. ३११), राँची में जीटीपीएल व डेन केबल पर तथा 'JioTV' एन्ड्रोइड एप पर उपलब्ध है।
- \* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।



# एक नाव में सवार होनेवाले तो तरते हैं लेकिन...



बाबा फरीद नाम के एक सूफी फकीर हो गये। वे अनन्य गुरुभक्त थे। गुरुजी की सेवा में ही उनका सारा समय व्यतीत होता था। एक बार उनके गुरु ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार ने उनको किसी खास काम के लिए मुलतान भेजा। वहाँ उन दिनों में शाह शम्स तबरेज के शिष्यों ने अपने गुरु के नाम का एक दरवाजा बनाया था और घोषणा की थी कि 'आज इस दरवाजे से जो गुजरेगा, वह जरूर जन्नत (स्वर्ग) में जायेगा।' हजारों फकीर और गृहस्थ उस दिन उस दरवाजे से गुजर रहे थे। नश्वर शरीर का त्याग होने के बाद स्वर्ग में स्थान मिलेगा ऐसी सबको आशा थी। फरीद को भी उनके मित्र-फकीरों ने दरवाजे से गुजरने के लिए खूब समझाया परंतु फरीद तो उनको जैसे-तैसे समझा-पटाकर अपना काम पूरा करके बिना दरवाजे से गुजरे ही अपने गुरुदेव के चरणों में पहुँच गये।

सर्वातर्यामी गुरुदेव ने उनसे मुलतान के समाचार पूछे और कोई विशेष घटना हो तो बताने के लिए कहा। फरीद ने शम्सजी के दरवाजे का वर्णन करके सारा वृत्तांत सुना दिया।

गुरुदेव बोले : "मैं भी वहाँ होता तो उस पवित्र दरवाजे से गुजरता... तुम कितने भाग्यशाली हो फरीद कि तुमको उस पवित्र दरवाजे से गुजरने का सुअवसर प्राप्त हुआ!"

सद्गुरु की लीला बड़ी अजीबोगरीब होती है। शिष्य को पता भी नहीं चलता और वे उसकी कसौटी कर लेते हैं।

भक्त  
गाथा

फरीद तो सत्शिष्य थे। उनकी अपने सद्गुरुदेव के प्रति अनन्य भक्ति थी। गुरुदेव के शब्द सुनकर वे बोले : "कृपानाथ! मैं तो उस दरवाजे से नहीं गुजरा। मैं तो केवल आपके दरवाजे से ही गुजरूँगा। एक बार मैंने आपकी शरण ली है तो अब और किसीकी शरण मुझे नहीं जाना है।"

यह सुनकर ख्वाजा कुतुबुद्दीन की आँखों में प्रेम उमड़ आया। शिष्य की दृढ़ श्रद्धा और अनन्य शरणागति देख के उसे उन्होंने छाती से लगा लिया। उनके हृदय की गहराई से आशीर्वादात्मक शब्द निकल पड़े : "फरीद! शम्स तबरेज के दरवाजे से गुजरनेवालों को तो जन्नत मिलेगी परंतु तुम्हारा दरवाजा तो ऐसा खुलेगा कि उसमें से जो भी कोई गुजरेगा उसे जन्नत से भी ऊँची गति मिलेगी।"

आज भी पाकिस्तान के पाक पट्टन में बने हुए बाबा फरीद के दरवाजे में से गुजरकर हजारों यात्री अपने को धनभागी मानते हैं। यह है अपने सद्गुरुदेव के प्रति अनन्य निष्ठा की महिमा!

जो भी अपने सद्गुरुदेव की पूर्ण शरणागति लेता है, वह हर तरह के द्वन्द्व से निकल जाता है। वह जान चुका होता है कि दुनिया की हकीकत क्या है और किसलिए वह इस दुनिया में आया है। पूर्ण गुरु अपने पूर्ण शरणागत शिष्य को ऐसा अलौकिक खजाना देते हैं कि जिसके आगे स्वर्ग भी कोई मायने नहीं रखता।

धन्य हैं ऐसे बाबा फरीद जैसे सत्शिष्य, जो अपने सद्गुरु के हाथों में अपने जीवन की बागडोर

# महापुरुषों की सरल युक्ति, खोले जटिल-से-जटिल गुत्थी

(भगवत्पाद साँई श्री लीलाशाहजी महाराज  
महानिर्वाण दिवस : १७ नवम्बर)



एक घटना मेरे गुरुदेव के साथ परदेश में घटी थी। हवाई अड्डे पर गुरुदेव को लेने के लिए बड़ी-बड़ी हस्तियाँ आयी थीं। कई लोग अपनी

बड़ी-बड़ी आलीशान गाड़ियों में गुरुदेव को बैठाने के लिए उत्सुक थे। एक-दो अगुआओं के कहने से और सब तो मान गये लेकिन दो भक्त हठ पर उतर गये : “गुरुदेव बैठेंगे तो मेरी ही गाड़ी में।”

एक ने कहा : “यदि पूज्य गुरुदेव मेरी गाड़ी में नहीं बैठेंगे तो मैं गाड़ी के नीचे सो जाऊँगा।”

दूसरे ने कहा : “मेरी गाड़ी में नहीं बैठेंगे तो मैं जीवित न रहूँगा।”

ऐसी परिस्थिति में क्या करें, क्या न करें यह किसीकी समझ में नहीं आ रहा था। दोनों बड़ी हस्तियाँ थीं, अहं का दायरा भी बड़ा था। दोनों में से किसीको भी बुरा न लगे - ऐसा सभी भक्त चाहते थे।

इतने में तो मेरे गुरुदेव का हवाई जहाज हवाई अड्डे पर आ गया। साँई बाहर आये तब समितिवालों ने भव्य स्वागत करके खूब नम्रता से परिस्थिति से अवगत कराया।

ऐसे ब्रह्मवेत्ता महापुरुष कभी-कभी ही परदेश पधारते हैं अतः स्वाभाविक है कि प्रत्येक व्यक्ति निकट का सान्निध्य प्राप्त करने का प्रयत्न करे। प्रेम से प्रयत्न करना अलग बात है एवं नासमझ की

- पूज्य बापूजी

तरह जिद करना अलग बात है। संत तो प्रेम से वश हो जाते हैं जबकि जिद के साथ नासमझी उपरामता ले आती है।

लोगों ने कहा : “दोनों के पास एक-दूसरे से टक्कर लें ऐसी गाड़ियाँ एवं निवास हैं। बहुत समझाया पर मानते नहीं हैं। अब आप ही इसका हल बताने की कृपा करें। हमें कुछ सूझता नहीं है।”

पूज्य गुरुदेव बड़ी सरलता एवं सहजता से बोले : “भाई! इसमें परेशान होने जैसी बात ही कहाँ है? सीधी बात है और सरल हल है। जिसकी गाड़ी में बैठूँगा उसके घर नहीं जाऊँगा और जिसके घर जाऊँगा उसकी गाड़ी में नहीं बैठूँगा। अब निश्चय कर लो।”

इस जटिल गुत्थी का हल गुरुदेव ने चुटकी बजाते ही कर दिया कि ‘एक की गाड़ी, दूसरे का घर।’

दोनों साँई के आगे हाथ जोड़कर खड़े हो गये : “गुरुदेव! आप जिस गाड़ी में बैठना चाहते हैं उसीमें बैठें। आपकी मर्जी के अनुसार ही होने दें।”

थोड़ी देर पहले तो हठ पर उतरे थे परंतु संत के व्यवहार-कुशलतापूर्ण हल से दोनों ने जिद छोड़कर निर्णय भी संत की मर्जी पर ही छोड़ दिया! प्राणिमात्र के परम हितैषी संतजनों द्वारा सदैव सर्व का हित ही होता है।

ब्रह्म गिआनी ते कछु बुरा न भइआ।

(ब्रह्मज्ञानी ते कछु बुरा न भया।)



# ऐसी दिवाली सैकड़ों गुना फलदायी है

- पूज्य बापूजी

(दीपावली पर्व : ५ से ९ नवम्बर)

दीपक हजारों जगमगाते, रोशनी चहुँ ओर है।  
ज्यों इन्द्र गृह सोहते, दीपावली सब ठौर है॥  
कूचे गली बाजार में, है रात का दिन हो रहा।  
तो भी रहा अंतर मलिन, तो दिव्य दिवाली कहाँ॥

बाहर तो उजाले हो रहे हैं लेकिन  
अंतर में शांति नहीं, भगवद्-दीया,  
भगवत्प्रकाश, भगवन्माधुर्य नहीं तो  
चहुँओर दीये जगमगाये - गली-  
कूचे<sup>१</sup> में, मकान-दुकान में,  
मानो इन्द्रपुरी बन गयी लेकिन  
हृदय को अगर भगवद्-पुरी

नहीं बनाया तो भैया ! इन्द्रपुरी भी कब तक ?  
धनभागी वे हैं जो हृदय को भगवद्-पुरी बना रहे  
हैं, हरि की शांति में, हरि के माधुर्य में प्रवेश पा  
रहे हैं। प्रीतिपूर्वक उसमें शांत होना ही उसकी  
शरण जाना है। यह असली दिवाली है।  
भगवत्प्रेम का अमृत वास्तविक मधुरता,  
वास्तविक दिवाली को प्रकट करनेवाला है।

वर्षा गयी ऋतु शरद आयी, अन्न से महि पूर्ण है।  
पक्षी-पशु चर औ' अचर, उत्साह से परिपूर्ण हैं॥  
है साल का आरम्भ, सारी वस्तुएँ भी है हुई।  
छूटा नहीं अज्ञान, तो क्या दिव्य दिवाली हुई॥  
आरोग्य रोगी हो गये, दुःख-दर्द से छूटे दुःखी।  
बूढ़े युवा नर नारि बालक, दीखते हैं सब सुखी॥  
आ दिव्य दिवाली जगतभर में उजाला कर गयी।  
अंतर नहीं यदि चाँदना क्या दिव्य दिवाली हुई॥

बारिश गयी, शरद ऋतु आ गयी, धरती  
अन्न से पूर्ण हो गयी। पशु-पक्षी, चर-अचर  
प्राणी सभी उत्साह, आह्लाद से भर गये। नूतन

१. कूचा = बड़ी गली

वर्ष के आरम्भ में सारी वस्तुएँ भी घर में आ गयीं  
परंतु यदि अज्ञानरूपी अँधेरा जीवन से नहीं गया  
तो फिर दिवाली क्या मनायी ?

रोगी निरोगी हो गये, बालक जवान हो गये,  
जवानों ने शादी-विवाह कर लिये,  
अनपढ़ पढ़े-लिखे हो गये लेकिन  
अंतरात्मा की ज्योति नहीं जगी तो  
आखिर मरकर क्या झक मारेंगे !  
कोई गिरगिट तो कोई प्रेत बन  
जाता है, कोई घोड़ा तो कोई  
बैल बन जाता है, तो सब

दिवालियाँ मनायीं... आखिर क्या ? इसलिए  
भैया, लाला, मेरे स्नेही ! अंतर आत्मप्रकाश की  
दिवाली का लक्ष्य बना लो !

आकाश निर्मल दीखता, निर्मल हुआ है चंद भी।  
थिर हो गया है सिंधु, निर्मल बह रही नदियाँ सभी॥  
सप्रेम लक्ष्मी देवी की, श्रद्धासहित पूजा भई।  
तो भी रहा मन मलिन, तो क्या दिव्य दिवाली हुई॥

आकाश स्वच्छ दिखाई देता है, चन्द्रमा भी  
निर्मल हो गया है, समुद्र स्थिर हो गया है, नदियों  
के जल निर्मल हुए, लक्ष्मी-पूजन भी हो गया...  
यह सब ठीक है लेकिन मन तो मलिन रहा ! 'यह  
भोगूँ, यह खाऊँ, यह करूँ और सुखी रहूँ...'  
अंदर का सुख नहीं पाया तो भैया ! आखिर क्या  
? इसलिए निर्मल ध्यान, निर्मल चिंतन, निर्मल  
स्मृति, निर्मल जिज्ञासा से मन को निर्मल करो  
कि 'ऐसे दिन कब आयेंगे कि अपने आत्मसुख में  
जगूँगा, अपने हृदय को निर्मल करूँगा, निर्मल  
सुख पाऊँगा ?' संसार के सारे सुख विकारों के  
मल से भरे हैं। मलिन सुख बाहर भगाता है और

पर्व  
मांगल्य

लक्ष्मीप्राप्ति हेतु साधना  
पृष्ठ ३४ पर





## विद्यार्थी संस्कार



### गुरुआज्ञा-पालन में जीवन लगानेवाले महान आयुर्वेदाचार्य



मगध-नरेश बिम्बिसार के पुत्र राजकुमार अभय को एक बार जंगल में एक अनाथ नवजात शिशु मिला। वह उसे अपने घर ले आया और उसका नाम रखा जीवक। राजकुमार ने बच्चे की

शिक्षा व लालन-पालन का पूरा प्रबंध किया।

जब जीवक बड़ा हुआ तो उसने राजकुमार से पूछा : “मेरे माता-पिता कौन हैं?” राजकुमार ने उससे कुछ भी छिपाना ठीक नहीं समझा। उसने उसे पूरी बात बता दी। वह सुनकर जीवक बोला : “मैं आत्महीनता का बोझ लेकर कहाँ जाऊँ?” इस पर राजकुमार ने उसे ढाढ़स बँधाते हुए कहा : “इस बात को लेकर दुःखी होने के बजाय तुम तक्षशिला अध्ययन करने जाओ।” जीवक विद्याध्ययन के लिए चल पड़ा। विद्यालय में प्रवेश करते समय वहाँ के आचार्य ने उससे पूछा : “बेटा! तुम्हारे माता-पिता का नाम क्या है? तुम्हारा कुल और गोत्र क्या है?” जीवक ने सभी प्रश्नों के यथावत् उत्तर दिये। उसकी सच्चाई से प्रसन्न होकर आचार्य ने उसे विद्यालय में प्रवेश दे दिया।

जीवक ने वहाँ कठोर परिश्रम करते हुए आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त की। उसके गुरु चाहते थे कि वह मगध जाकर लोगों का उपचार करे। जब यह बात जीवक को पता चली तो उसने

अपने गुरुदेव से कहा : “मैं जहाँ भी जाऊँगा, लोग मेरे माता-पिता और कुल-गोत्र के बारे में पूछेंगे। अतः मुझे यहीं रहने दीजिये।”

गुरु ने कहा : “बेटा! तुम्हारी प्रतिभा और ज्ञान ही तुम्हारे कुल और गोत्र हैं। तुम लोगों की निष्काम भाव से सेवा करो। स्मरण रखना कि कर्म से ही मनुष्य की पहचान होती है, कुल और गोत्र से नहीं।”

गुरु के वचनों ने जीवक को आत्मविश्वास से भर दिया। जीवक ने गुरुआज्ञा का ईमानदारी से पालन किया, निष्काम भाव से रुग्णों की सेवा में लग गये। वे उच्च श्रेणी के आयुर्वेदाचार्य के रूप में पूरे मगध राज्य में प्रसिद्ध हुए। गुरुआज्ञा को शिरोधार्य कर गुरुदेव के सिद्धांतों के पालन में अपना जीवन न्योछावर करनेवाले गुरुभक्त जीवक के नाम की गणना आज भी महान आयुर्वेदाचार्यों के नामों में होती है। □

#### चार वेदों के चार महावाक्य

हमारे चार वेदों के चार महावाक्य हैं। क्या आप बता सकते हैं कि किस वेद में कौन-सा महावाक्य आता है? (उत्तर इसी अंक में)

- |                       |              |
|-----------------------|--------------|
| (१) प्रज्ञानं ब्रह्म। | (क) यजुर्वेद |
| (२) अहं ब्रह्मास्मि।  | (ख) अथर्ववेद |
| (३) तत्त्वमसि।        | (ग) ऋग्वेद   |
| (४) अयमात्मा ब्रह्म।  | (घ) सामवेद   |

## विष सर्प में है, बाँबी में नहीं !

(‘पराशर-मैत्रेय संवाद’ अंक ३०१ से आगे)

मैत्रेय अपने गुरुदेव महर्षि पराशरजी से बोले :  
“मैं जलता हूँ (देह-त्याग करूँगा), दुःख से छूट जाऊँगा और सुख को पाऊँगा।”

पराशरजी ने कहा : “हे मैत्रेय! इस अनादि संसार में लाखों बार तेरी और सब लोगों की देहें उत्पन्न होकर जलती, खाक होती, पृथ्वी में मिलती आयी हैं परंतु दुःख न मिटे, अतः जड़ देह को जलाने से दुःख नहीं मिटता। हे मैत्रेय! बाँबी को मारने-जलाने-गलाने से सर्प नहीं मरता। जैसे विष सर्प में है बाँबी में नहीं, वैसे ही देहरूप बाँबी में स्थित अहंकाररूप सर्प में जन्म-मरण, अहं-त्वं, हर्ष-शोक, सुख-दुःख आदि विष हैं, देहरूपी बाँबी में नहीं। जब तू अहंकाररूप सर्प को ज्ञानाग्नि से जलाकर राख करेगा, तब अहंकाररूप सर्पसहित पंचभूतात्मक देहरूप बाँबी भस्मीभूत हो जायेगी (देहादि के प्रति सत्यबुद्धि नष्ट होकर वह स्वप्न-देहवत् प्रतीत होगी)। अहंकाररूप कारण के नाश से नामरूपात्मक जगतरूप कार्य यत्न बिना स्वयं ही नष्ट होगा, जैसे दीपक का प्रकाश करने से यत्न बिना अंधकार नष्ट होता है। प्रकाश के होने से अंधकार जाता नहीं दिखता कि कहाँ गया।”

(‘आध्यात्मिक विष्णु पुराण’ से क्रमशः)

### स्वरूप में स्थिति कैसे हो ?

- पूज्य बापूजी

स्वरूप में स्थिति तो है ही। स्वरूप से बाहर कोई जा नहीं सकता। केवल जानना है। उसके लिए ॐकार का गुंजन करके जितनी देर उच्चारण, उतनी देर शांत होना है।



जीवन जीने  
की कला

## मंत्रजप साधना

(गतांक से आगे)

**साधना हेतु कैसा हो आपका  
आसन ?**

साधना के लिए ऐसे आसन में बैठना चाहिए, जिसमें अधिक देर तक बैठने से कष्ट न हो। इसके लिए सिद्धासन या सुखासन (पलथी मारकर बैठना) उपयुक्त होता है। मेरुदंड सदा सीधा रहे, जिससे सुषुम्ना नाड़ी में प्राण का प्रवाह सुविधापूर्वक हो सके।

सिद्धासन में बैठकर बालक भी जप करेगा तो उसका मंत्र सिद्ध होगा। यह आसन मंत्रजप में सफलता देगा। इससे संकल्प-विकल्प कम होने से मन शांत होगा। शांत मन अंतर्यामी परमात्मा के नजदीक होता है। जो संकल्प लेकर जपेंगे वे सिद्ध होंगे। कम्बल, कुश आदि किसी विद्युत-कुचालक आसन पर बैठकर साधना करनी चाहिए। ध्यान, जप करने से आपके शरीर में एक आध्यात्मिक विद्युत ऊर्जा पैदा होती है। वह आपके वात, पित्त और कफ के दोषों को निवृत्त करके स्वास्थ्य-लाभ भी कराती है, मन और प्राण को ऊपर ले आती है। अतः जब ध्यान-भजन करें तो नीचे विद्युत का कुचालक आसन बिछा हो, जिससे





## च्यवनप्राश

यह बल, वीर्य, स्मरणशक्ति व बुद्धि वर्धक है। बुढ़ापे को दूर रखता है व भूख बढ़ाता है। जीर्णज्वर, दौर्बल्य, शुक्रदोष, पुरानी खाँसी, क्षयरोग (टी.बी.) तथा फेफड़ों, मूत्राशय व हृदय के रोगों में विशेष लाभकारी है। यह दीर्घायु, चिरयौवन, प्रतिभा शक्ति देनेवाला है। स्वस्थ या बीमार, बालक, युवक, वृद्ध - सभी इसका सेवन कर सकते हैं।

१ किलो ₹ १६०  
केसरयुक्त ₹ १९९

## ब्राह्मी शरबत

बुद्धिवर्धक तथा स्फूर्तिदायक इस शुद्ध ब्राह्मी शरबत के सेवन से ज्ञानतंतु व मस्तिष्क पुष्ट होते हैं, दिमाग शांत व ठंडा होता है।

बौद्धिक थकावट, स्मरणशक्ति की कमी, मानसिक रोग, क्रोध, चिड़चिड़ापन दूर होकर मन-बुद्धि को विश्रान्ति मिलती है। ब्राह्मी जैसी गंधवाले कृत्रिम फ्लेवर (artificial flavour) नहीं, शुद्ध ब्राह्मी का शरबत हो तब ये लाभ मिलते हैं। ७०० मि.ली. ₹ ८०



## आँवला-अदरक शरबत

यह यकृत (liver) व आँतों की कार्यक्षमता, चेहरे की कांति, रोगप्रतिकारक शक्ति व भूख बढ़ाता है। इससे पाचन ठीक से होता है एवं शरीर पुष्ट व बलवान बनता है। यह अरुचि, अम्लपित्त (hyperacidity), पेट फूलना, कब्ज आदि अनेक रोगों एवं हृदय, मस्तिष्क व बालों हेतु लाभदायी है। इसके सेवन से दिनभर उत्साह, प्रसन्नता व स्फूर्ति बनी रहती है। ७०० मि.ली. ₹ ८०

## आँवला-अदरक पेय

यह पेय मानव-शरीर के लिए अत्यंत गुणकारी है। यह रसायन का कार्य करता है, साथ ही रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। यह विटामिन 'सी' एवं प्राकृतिक खनिज लवणों से परिपूर्ण है। इसके निरंतर सेवन से कब्ज में राहत मिलती है, आँखों की रोशनी बढ़ती है, शरीर का अम्लीय और क्षारीय स्तर संतुलित रहता है। १ लीटर ₹ ४०



उपरोक्त सामग्री आप अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं। अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे सामग्री प्राप्त करने हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें: "Ashram eStore" App या विजिट करें: [www.ashramstore.com](http://www.ashramstore.com) रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क: (०७९) ३९८७७३०, ई-मेल: [contact@ashramstore.com](mailto:contact@ashramstore.com)

### "Rishi Prasad Official" Android App



- ❑ ऋषि प्रसाद के चुनिंदा लेख व जीवनोपयोगी कुंजियाँ
- ❑ पर्वों व पुण्यदायी तिथियों के संदेश
- ❑ पूज्य बापूजी के नित्य नूतन दर्शन एवं अमृतवचन
- ❑ ऋषि प्रसाद सदस्यता एवं ई-मैगजीन

### ज्ञान का अनमोल खजाना अब आपके हाथों में...

#### "Rishi Darshan" Android App



- ❑ पूज्यश्री के दुर्लभ सत्संग, कीर्तन, भजन, स्वास्थ्य-युक्तियाँ, अनुभव आदि के नये विडियो
- ❑ ऋषि दर्शन सदस्यता व ऑनलाइन डाउनलोड की सुविधा



### "Mangalmay Official" Android & Apple Apps

- ❑ त्रिकाल संध्या (Live & Download)
- ❑ श्री योगवासिष्ठ पठन
- ❑ पूज्यश्री के सत्संग-भजन-कीर्तन
- ❑ बाल संस्कार केन्द्र, युवा सेवा संघ, महिला उत्थान मंडल, गुरुकुल आदि की प्रवृत्तियाँ

आज ही Google play Store ( ) से तीनों एप डाउनलोड करें। मंगलमय एप्पल एप App Store ( ) पर उपलब्ध है।



## म. उ. मंडल ने मनाया रक्षाबंधन, गणमान्यों की बाँधे रक्षासूत्र



श्री ओमप्रकाश  
कोहली  
राज्यपाल,  
गुजरात



श्री के.जी. वंजारा  
निदेशक,  
विकासशील जाति  
कल्याण, गुज. सरकार



श्री मोहन झा  
पुलिस  
महानिदेशक  
(जेल), गुज.



श्री विक्रान्त पांडे  
जिलाधीश  
अहमदाबाद

## जेलों में कैदी उत्थान कार्यक्रम व रक्षाबंधन



रोहतास (हरि.)



लखनऊ



कोटा (राज.)



इंदौर



सामर (म.प्र.)



नवसारी (गुज.)



जम्मू



पालनपुर  
(गुज.)



राजकोट

अन्य तस्वीरों हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, सितम्बर २०१८, आवरण पृष्ठ ४

RNI No. 48873/91  
RNP. No. GAMC 1132/2018-20  
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2020)  
Licence to Post Without Pre-payment.  
WPP No. 08/18-20  
(Issued by CPMG UK, valid upto 31-12-2020)  
Posting at Dehradun G.P.O. between  
1<sup>st</sup> to 17<sup>th</sup> of every month.  
Date of Publication: 1<sup>st</sup> Oct 2018

## ‘ऋषि प्रसाद’ अभियानों व सम्मेलनों में भाग लेते पुण्यात्मा



रोहतास (बिहार)



पुणे



कूटा, जि. कटुआ (जम्मू-कश्मीर)



लुधियाना

## केरल में बाढ़-पीड़ितों को पहुँचायी गयी राहत-सामग्री



स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट [www.ashram.org/sewa](http://www.ashram.org/sewa) देखें।

## नववर्ष के उपहार



पूज्य बापूजी के सत्प्रेरणा व शांति प्रदायक एवं चित्ताकर्षक श्रीचित्रों तथा अनमोल आशीर्वचनों से सुसज्जित वर्ष २०१९ के वॉल कैलेंडर, पॉकेट कैलेंडर व डायरी उपलब्ध है।

कैलेंडर के ऑनलाइन ऑर्डर हेतु विजिट करें : [www.ashramstore.com/calendar](http://www.ashramstore.com/calendar)

२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम, फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं। सम्पर्क : अहमदाबाद मुख्यालय - (०७९) ३९८७७३२२